

सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन के निर्धारण में संगीत की भूमिका

Jasmeet Kour Kour

Associate Prof
GDC R S Pura

सारांश

संगीत मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन और प्रभावशाली कलाओं में से एक है। यह केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है बल्कि व्यक्ति और समाज के भावनात्मक एवं सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाली महत्वपूर्ण शक्ति है। प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्ट संगीत परंपराएँ होती हैं जिनमें उस समाज की जीवन पद्धति, धार्मिक आस्थाएँ, सामाजिक संबंध, रीति-रिवाज, लोकविश्वास और ऐतिहासिक अनुभव प्रतिबिंबित होते हैं। संगीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी सांस्कृतिक मूल्यों के हस्तांतरण का कार्य करता है और सामूहिक पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय संदर्भ में शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, भक्ति संगीत, सूफी संगीत, देशभक्ति गीत तथा आधुनिक संगीत ने सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक परिवर्तन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में संगीत और समाज के पारस्परिक संबंध, सांस्कृतिक पहचान के निर्माण, सामाजिक एकता, धार्मिक एवं आध्यात्मिक जीवन, राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक परिवर्तन तथा आधुनिक तकनीकी युग में संगीत की बदलती भूमिका का अध्ययन किया गया है।

प्रमुख शब्द: संगीत, संस्कृति, समाज, सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक पहचान, लोक संगीत, राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक परिवर्तन।

1^{वाँ} प्रस्तावना

मानव जीवन और संगीत का संबंध अत्यंत प्राचीन है। मानव ने प्रकृति की ध्वनियों, पक्षियों के स्वर, वर्षा की रिमझिम, नदी की कल-कल तथा हृदय की धड़कनों में संगीत का अनुभव किया। धीरे-धीरे इन प्राकृतिक ध्वनियों से प्रेरणा लेकर मनुष्य ने संगीत की विभिन्न विधाओं का विकास किया। इस प्रकार संगीत मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ विकसित होता रहा।

संगीत व्यक्ति के मनोभावों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। प्रसन्नताएँ प्रेमएँ करुणाएँ विरहएँ वीरताएँ भक्तिएँ आशा और संघर्ष जैसे अनेक भाव संगीत के माध्यम से व्यक्त किए जाते हैं। यही कारण है कि संगीत व्यक्तिगत अनुभव से आगे बढ़कर सामूहिक जीवन का हिस्सा बन जाता है।

किसी भी समाज की संस्कृति को समझने के लिए उसके संगीत का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है। लोकगीतों में ग्रामीण जीवन दिखाई देता है। धार्मिक संगीत में आध्यात्मिक चेतनाएँ वीर गीतों में संघर्ष और साहसएँ विवाह गीतों में सामाजिक संबंध तथा देशभक्ति गीतों में राष्ट्रीय भावना अभिव्यक्त होती है।

अतः संगीत को केवल कला के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। यह समाज की संरचनाएँ संस्कृति और सामूहिक चेतना को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण सामाजिक शक्ति है।

2^० संगीत और संस्कृति का अंतर्संबंध

संगीत कब और किस कालखंड में मानव संस्कृति का अभिन्न अंग बनाएँ इसका निश्चित उत्तर आज भी शोध और जिज्ञासा का विषय है। संगीत की उत्पत्ति को यदि आदिम मानव की सहज एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति से जोड़कर देखा जाए तो यह अनुमान लगाया जा सकता है कि संगीत का प्रारंभ उसी समय हो गया होगा जब मानव ने अपने परिवेश को समझनाएँ अपने भावों को अनुभव करना और उन्हें किसी माध्यम से अभिव्यक्त करना प्रारंभ किया।

आदिम मानव के लिए संगीत संभवतः किसी विकसित कलाविधा के रूप में नहीं बल्कि उसकी भावनात्मक और स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं के रूप में अस्तित्व में आया होगा। हर्षएँ दुःखएँ भयएँ उत्साहएँ प्रेम तथा सामूहिकता जैसे भावों की अभिव्यक्ति में स्वरएँ ध्वनिएँ लय और शारीरिक गतियों का प्रयोग धीरे-धीरे संगीतात्मक अभिव्यक्ति का आधार बना होगा। इस दृष्टि से संगीत का इतिहास मानव की भावनात्मक एवं सामाजिक चेतना के विकास से गहराई से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। आदिम मानव के लिए हर्षएँ दुःखएँ भयएँ प्रेमएँ उत्साह और आश्चर्य जैसे भाव केवल आंतरिक अनुभूतियाँ नहीं थे बल्कि वे ध्वनिएँ स्वरएँ शारीरिक गति और लय के माध्यम से भी अभिव्यक्त होते थे। संभवतः यही सहज अभिव्यक्तियाँ आगे चलकर संगीत के प्रारंभिक रूपों का आधार बनीं। इस दृष्टि से संगीत को केवल एक कलात्मक विधा के रूप में नहीं बल्कि मानव की भावनात्मक और सामाजिक अभिव्यक्ति के स्वाभाविक विस्तार के रूप में समझा जा सकता है।

संगीत और संस्कृति के इस प्रारंभिक संबंध को समझने के लिए अतीत की ओर देखते समय प्रकृति की भूमिका को भी विशेष महत्व देना आवश्यक है। पक्षियों का कलरवएँ जल का प्रवाहएँ वर्षा की ध्वनिएँ हवाओं की सरसराहट तथा अन्य प्राकृतिक ध्वनियाँ मानव को निरंतर प्रभावित करती रही होंगी। मानव ने इन ध्वनियों को सुनाएँ अनुभव किया और संभवतः अपने स्वर तथा लय के माध्यम से उनका अनुकरण भी किया। इस

प्रकार प्रकृति और मानव व्यवहार के पारस्परिक संबंध ने संगीत के प्रारंभिक स्वरूप को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समय के साथ यही सहज ध्वन्यात्मक और लयात्मक अभिव्यक्तियाँ सामूहिक जीवन की रीति-रिवाजों, उत्सवों, धार्मिक अनुष्ठानों और सामाजिक परंपराओं से जुड़ी चली गई। फलस्वरूप संगीत केवल व्यक्तिगत भावाभिव्यक्ति तक सीमित न रहकर सामूहिक स्मृति और सांस्कृतिक पहचान का माध्यम बन गया। इस प्रकार संगीत और संस्कृति का विकास दो पृथक प्रक्रियाओं के रूप में नहीं, बल्कि एक-दूसरे को प्रभावित और समृद्ध करने वाली निरंतर प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है।

जिस प्रकार संस्कृति मानव के सामूहिक जीवन, अनुभवों, विश्वासों और परंपराओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाती है, उसी प्रकार संगीत भी उन अनुभवों और भावनाओं को स्वर एवं लय के माध्यम से संरक्षित और संप्रेषित करता आया है। इस अर्थ में संगीत संस्कृति का केवल एक हिस्सा नहीं, बल्कि उसके निर्माण, संरक्षण और निरंतर विकास का एक सशक्त माध्यम भी है।

संस्कृति किसी समाज की जीवन-पद्धति, विचारधारा, विश्वास, परंपराओं, भाषा, कला और सामाजिक व्यवहार का समग्र रूप है। संगीत संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। किसी क्षेत्र की संगीत शैली उसके भौगोलिक वातावरण, इतिहास, भाषा और सामाजिक संरचना से प्रभावित होती है।

उदाहरण के लिए पंजाब के लोकगीतों में कृषि, वीरता, प्रेम और उत्सव की भावना दिखाई देती है। राजस्थान का लोक संगीत वहाँ के मरुस्थलीय जीवन, लोकविश्वास और वीर परंपराओं को अभिव्यक्त करता है। बंगाल के संगीत में वहाँ की साहित्यिक एवं भक्ति परंपराओं का प्रभाव दिखाई देता है। इसी प्रकार कश्मीर, हिमाचल, उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण भारत की संगीत परंपराएँ अपने-अपने सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को अभिव्यक्त करती हैं।

इस प्रकार संगीत किसी संस्कृति का केवल प्रतिबिंब ही नहीं है, बल्कि वह संस्कृति को जीवित रखने और आगे बढ़ाने का माध्यम भी है।

3rd सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में संगीत की भूमिका

संगीत व्यक्ति को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है। लोकगीत, पारंपरिक वाद्य, धार्मिक गायन तथा क्षेत्रीय संगीत किसी समुदाय को उसकी विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं।

जब कोई व्यक्ति अपने क्षेत्र का लोकगीत सुनता या गाता है तो उसके भीतर अपने समुदाय, भाषा और परंपरा के प्रति जुड़ाव की भावना उत्पन्न होती है। प्रवासी समुदायों के लिए तो संगीत अपनी मातृभूमि और सांस्कृतिक विरासत से जुड़े रहने का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है।

इस प्रकार संगीतक

- सांस्कृतिक स्मृति को सुरक्षित रखता है।
- परंपराओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाता है।
- सामुदायिक पहचान को मजबूत करता है।
- भाषा एवं लोकसाहित्य के संरक्षण में सहायता करता है।
- सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखने में योगदान देता है।

4th सामाजिक एकता के निर्माण में संगीत

संगीत की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक शक्तियों में से एक है **लोगों को एक साथ लाने की क्षमता**।

सामूहिक गायन, भजन, कीर्तन, सूफी संगीत, लोक उत्सव, राष्ट्रीय पर्व और सांस्कृतिक कार्यक्रम लोगों को एक साझा भावनात्मक अनुभव प्रदान करते हैं। जब अनेक व्यक्ति एक साथ किसी गीत को गाते हैं तो उनमें सामूहिकता और सहभागिता की भावना विकसित होती है।

संगीत जाति, भाषा, क्षेत्र और सामाजिक स्थिति की सीमाओं को कुछ समय के लिए कम कर सकता है। यही कारण है कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक समारोहों में संगीत का विशेष महत्व रहा है।

5th धार्मिक एवं आध्यात्मिक जीवन में संगीत

जब मानव ने यह अनुभव किया कि पंचतत्त्वों से परे भी कोई ऐसी अदृश्य एवं परम शक्ति विद्यमान है जो समस्त सृष्टि का आधार और संचालक है तब उसने उस शक्ति को विभिन्न नामों से संबोधित किया। कहीं उसे ईश्वर कहा गया, कहीं वाहेगुरु, कहीं अल्लाह और कहीं खुदा। इस परम सत्ता के प्रति मानव के समर्पण, श्रद्धा, विश्वास और आस्था की भावना को ही आगे चलकर भक्ति की संज्ञा दी गई।

मानव के अंतर्मन में उत्पन्न इस भक्तिभाव को अभिव्यक्त करने और उसे उसके चरम अनुभव तक पहुँचाने में संगीत ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब मानव ने अपने भावों, संवेदनाओं और आध्यात्मिक अनुभूतियों को स्वर, लय और ध्वनि के माध्यम से व्यक्त करना प्रारंभ किया तब संगीत और भक्ति का एक अत्यंत गहरा एवं आत्मीय संबंध स्थापित हुआ। इसी क्रम में संगीत केवल मनोरंजन अथवा कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम न रहकर आध्यात्मिक अनुभूति और ईश्वरसाक्षात्कार का साधन भी बन गया। इस प्रकार भक्ति और संगीत का संबंध मानव की सहज एवं स्वाभाविक आध्यात्मिक चेतना से विकसित हुआ।

परंपरागत रूप से किसी समाज की आस्थाए विश्वास और धार्मिक अनुभूतियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होती रहती हैं। इसी परंपरा के माध्यम से भक्ति संगीत ने भी निरंतर विकास प्राप्त किया। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में भक्ति और संगीत के इस अटूट संबंध को अनेक धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से प्रतिष्ठित किया गया है। भगवान कृष्ण की मुरलीए माता सरस्वती की वीणाए भगवान शिव का डमरू तथा नारद मुनि के हाथ में विद्यमान एकतारा इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इन प्रतीकों ने साहित्यए संगीतए चित्रकलाए मूर्तिकला तथा अन्य कलारूपों में भक्ति और संगीत के पारस्परिक संबंध को अभिव्यक्त किया है। धर्म और संगीत का संबंध प्राचीन काल से रहा है। भारतीय परंपरा में मंत्रोच्चारण सामगानए भजनए कीर्तनए शब्दए सूफी संगीत और विभिन्न धार्मिक गायन शैलियाँ आध्यात्मिक अनुभव का हिस्सा रही हैं।

संगीत व्यक्ति के मन को एकाग्र करनेए भावनात्मक शांति प्रदान करने और आध्यात्मिक अनुभूति को गहरा करने में सहायक होता है। मंदिरोंए गुरुद्वारोंए मस्जिदोंए दरगाहों और अन्य धार्मिक स्थलों में विभिन्न प्रकार के संगीत का प्रयोग सामूहिक आध्यात्मिक अनुभव को बढ़ाता है।

इस दृष्टि से संगीत केवल धार्मिक अभिव्यक्ति नहीं है बल्कि यह सामाजिक समुदायों के बीच संबंध स्थापित करने का माध्यम भी बन सकता है।

लोक संगीत किसी समाज के दैनिक जीवन का जीवंत दस्तावेज होता है। इसमें सामान्य व्यक्ति के सुख:दु:खए प्रेमए संघर्षए श्रमए उत्सव और सामाजिक अनुभवों की अभिव्यक्ति मिलती है।

जन्मए विवाहए फसलए त्योहारए ऋतु परिवर्तन और धार्मिक अवसरों से संबंधित लोकगीत सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों को संरक्षित करते हैं।

लोक संगीत का महत्व इसलिए भी है कि यह प्रायः लिखित इतिहास के बाहर मौजूद सामाजिक अनुभवों को सुरक्षित रखता है। महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले विवाह और घरेलू लोकगीत विशेष रूप से सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन के अनेक पहलुओं को अभिव्यक्त करते हैं।

6th संगीत और सामाजिक परिवर्तन

संगीत केवल परंपराओं को बनाए रखने का माध्यम नहीं है यह सामाजिक परिवर्तन का प्रभावशाली साधन भी हो सकता है।

इतिहास में अनेक संगीतकारों और कवियों ने संगीत के माध्यम से सामाजिक बुराईयोंए अन्यायए असमानता और शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई है। भक्ति आंदोलन के संतों ने संगीत और पदों के माध्यम से जातिगत भेदभाव तथा धार्मिक आडंबरों को चुनौती दी। सूफी परंपरा ने प्रेमए मानवता और भाईचारे का संदेश दिया।

आधुनिक युग में भी संगीत के माध्यम से

- सामाजिक जागरूकताएँ
- महिला सशक्तिकरणएँ
- पर्यावरण संरक्षणएँ
- शिक्षाएँ
- शांतिएँ
- समानताएँ
- मानवाधिकार

जैसे विषयों पर जनचेतना उत्पन्न की जा सकती है।

इस प्रकार संगीत समाज में विचार परिवर्तन की प्रक्रिया को गति प्रदान कर सकता है।

राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में संगीत

राष्ट्रीय गीत और देशभक्ति संगीत सामूहिक राष्ट्रीय भावना के निर्माण में विशेष भूमिका निभाते हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अनेक गीतों ने लोगों में साहसएँ एकता और स्वतंत्रता की आकांक्षा को मजबूत किया। राष्ट्रीय गानएँ राष्ट्रीय गीत और देशभक्ति गीत व्यक्ति के भीतर राष्ट्र के प्रति भावनात्मक संबंध उत्पन्न करते हैं। सामूहिक रूप से राष्ट्रगान या देशभक्ति गीत गाने से लोगों में एकता और साझा राष्ट्रीय पहचान की अनुभूति होती है।

इस प्रकार संगीत व्यक्ति को व्यक्तिगत स्तर से उठाकर सामूहिक एवं राष्ट्रीय चेतना से जोड़ने का कार्य करता है।

संगीत और भावनात्मक जीवन

संगीत मानव की भावनाओं को प्रभावित करने की अद्भुत क्षमता रखता है। कभी यह आनंद उत्पन्न करता हैएँ कभी दुःख को अभिव्यक्ति देता है और कभी संघर्ष के समय साहस प्रदान करता है।

संगीतकृ

- तनाव एवं मानसिक दबाव को कम करने में सहायक हो सकता है।
- भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनता है।
- स्मृतियों को जागृत करता है।
- सामाजिक संबंधों को मजबूत कर सकता है।
- व्यक्ति को सामूहिक भावनात्मक अनुभव से जोड़ता है।

किसी विशेष गीत से जुड़ी स्मृति लंबे समय तक व्यक्ति के मन में बनी रह सकती है। इस प्रकार संगीत व्यक्तिगत और सामूहिक स्मृति दोनों का महत्वपूर्ण माध्यम है।

संगीत और शिक्षा

संगीत शिक्षा केवल संगीत सीखने तक सीमित नहीं है। संगीत के माध्यम से अनुशासन सहयोग संवेदनशीलता रचनात्मकता और आत्म-अभिव्यक्ति जैसे गुणों का विकास किया जा सकता है।

सामूहिक गायन एवं वादन विद्यार्थियों में टीम भावना और सहयोग की भावना उत्पन्न करते हैं। विद्यालय एवं महाविद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति और अन्य संस्कृतियों को समझने का अवसर प्रदान करते हैं।

इसलिए संगीत शिक्षा व्यक्ति के बौद्धिक विकास के साथ-साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास में भी योगदान देती है।

संगीत और सामाजिक समावेशन

संगीत विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच संवाद स्थापित करने का माध्यम बन सकता है। अलग-अलग भाषाओं क्षेत्रों और समुदायों के संगीत को एक मंच पर प्रस्तुत करने से विविधता के प्रति सम्मान विकसित होता है।

विशेष रूप से सांस्कृतिक उत्सव संगीत समारोह और सामूहिक प्रस्तुतियाँ सामाजिक समावेशन को बढ़ावा दे सकती हैं। संगीत उन व्यक्तियों को भी अभिव्यक्ति का अवसर देता है जिन्हें सामाजिक या भाषायी बाधाओं के कारण अपनी बात व्यक्त करने में कठिनाई हो सकती है।

वैश्वीकरण और संगीत का बदलता स्वरूप

वैश्वीकरण तथा डिजिटल तकनीक ने संगीत के उत्पादन प्रसार और उपभोग के स्वरूप को बदल दिया है। आज इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से किसी भी क्षेत्र का संगीत विश्व के दूसरे हिस्सों तक आसानी से पहुँच सकता है।

इससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला है और विभिन्न संगीत परंपराओं का मिश्रण बढ़ा है। दूसरी ओर अत्यधिक व्यावसायीकरण के कारण कुछ पारंपरिक संगीत शैलियों के सामने संरक्षण की चुनौती भी उत्पन्न हुई है।

अतः आधुनिक युग में आवश्यकता है कि नई संगीत तकनीकों और वैश्विक प्रभावों को स्वीकार करते हुए स्थानीय एवं पारंपरिक संगीत विरासत का संरक्षण भी किया जाए।

संगीतरूप परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु

संगीत परंपरा और आधुनिकता के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करता है। आज अनेक कलाकार शास्त्रीय और लोक संगीत को आधुनिक संगीत तकनीकों के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं।

फ्यूजन संगीत इसका एक उदाहरण है जिसमें विभिन्न संगीत परंपराओं का संयोजन किया जाता है। यदि यह प्रक्रिया संवेदनशीलता और मौलिकता के साथ की जाए तो यह परंपरागत संगीत को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रभावी माध्यम बन सकती है।

इस प्रकार संगीत अतीत की सांस्कृतिक स्मृतियों को वर्तमान से जोड़ते हुए भविष्य की सांस्कृतिक दिशा को भी प्रभावित करता है।

7th संगीत की सामाजिक भूमिका की प्रमुख विशेषताएँ

सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन के निर्धारण में संगीत की भूमिका को निम्न बिंदुओं में समझा जा सकता है:

1. सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण
2. सामूहिक पहचान का निर्माण
3. सामाजिक एकता और भाईचारे को बढ़ावा
4. धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना का विकास
5. राष्ट्रीय भावना एवं देशभक्ति का विकास
6. सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता
7. लोक परंपराओं एवं भाषाओं का संरक्षण
8. भावनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम
9. शैक्षिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास
10. सामाजिक समावेशन और संवाद को बढ़ावा
11. परंपरा और आधुनिकता के बीच संबंध स्थापित करना
12. सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करना

8^ण निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि संगीत मानव जीवन का केवल मनोरंजनात्मक पक्ष नहीं है बल्कि यह व्यक्ति और समाज दोनों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संगीत समाज की संस्कृति को प्रतिबिंबित करता है उसे संरक्षित करता है और आवश्यकता पड़ने पर उसमें परिवर्तन की प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है। लोक संगीत सामाजिक जीवन की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करता है धार्मिक संगीत आध्यात्मिक चेतना को अभिव्यक्ति देता है राष्ट्रीय गीत राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करते हैं और सामाजिक चेतना से जुड़े गीत समाज में परिवर्तन की आकांक्षा उत्पन्न कर सकते हैं।

विशेष रूप से भारतीय समाज की बहुलतावादी संरचना में संगीत विविधताओं को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण शक्ति है। अलग-अलग भाषाओं, धर्मों, क्षेत्रों और समुदायों की संगीत परंपराएँ भारतीय सांस्कृतिक विविधता को समृद्ध करती हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि संगीत संस्कृति का दर्पण होने के साथ-साथ सामाजिक चेतना का निर्माता और सामाजिक परिवर्तन का उत्प्रेरक भी है। सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन के निर्धारण में संगीत की भूमिका निरंतर बनी रहेगी केवल उसके माध्यम से स्वरूप और अभिव्यक्ति के तरीके समय के साथ बदलते रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ एवं स्रोत

1. भरत मुनि कृ *नाट्यशास्त्र*
2. शार्ङ्गदेव कृ *संगीत रत्नाकर*
3. विष्णु नारायण भातखंडे कृ *हिंदुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका*
4. विष्णु दिगंबर पलुस्कर कृ *भारतीय संगीत संबंधी ग्रंथ एवं परंपरा*
5. [संपद कंदपन्नसवन कृ *जिम तौहे वछिवतजीमतद पदकपंद डनेपब*]
6. नतजँबी कृ *जिम तपेम वडिनेपब पद जीम [दबपमदजँवतसक]*
7. श्रीवीद ठसंबापदह कृ *भू डनेपबंस ६ डंद*
8. [संद च डमततपंड कृ *जिम [दजीतवचवसवहल वडिनेपब]*
9. भारतीय लोक संगीत एवं लोक-संस्कृति से संबंधित विभिन्न शोध-पत्र एवं संदर्भ ग्रंथ।
10. ठीतजपलँदहममज 1म डववसंकीतकृ.नकीीतपअंजअं

त्मेमंतबी च्चमत इल क्त श्रेंउममज ज्ञवनत
ववबपंजम च्चवमिवत
ळक तँ च्चतं
श्रेंउउन दक ज्ञौउपत